भूमिका

इस पुस्तक को लिखने का हमारा उद्देश्य किसी को जादूगर बनाने का नहीं है, और न हम यह चाहते हैं कि इस पुस्तक को पढ़कर कोई व्यक्ति जादू के खेल दिखाने लगे, क्योंकि इस कला में झूठ, छल, फरेब और धोखा प्रधान है। कोई खेल ऐसा नहीं है जिसमें यह चारो बातें न हों। मनोरंजन के लिए ही सही पर इन कुवृत्तियों का पोषण किसी भी दशा में उचित नहीं। मन में इनको स्थान मिलने से वे जीवन की अन्य दिशाओं मे भी घर दौड़ती हैं और कलुषित तत्वों को एकत्रित कर देती हैं यही कारण है कि इस प्रकार के कारोबार करने वालों का, खेल तमाशे दिखाने वालों का आत्मिक जीवन उच्चता की ओर अग्रसर नहीं हो पाता। इन बातों पर विचार करते हुए हम नहीं चाहते कि हमारा एक भी पाठक जादूगर बने। जादू के खेल दिखाकर किसी को भ्रम में डाले या इस प्रकार जीविका उपार्जित करे। इस लिए खेल दिखाने के लिए जितनी विस्तृत जानकारी की आवश्यकता है वह हमने अनावश्यक समझ कर लेखबद्ध नहीं की है। पोल खोलने के लिए संक्षिप्त रूप से लिख देने पर भी काम चल सकता है। पाठक जादूगरी के फरेब को समझ जांय यही हमरा उद्देश्य था और इस उद्देश्य की पूर्ति संक्षिप्त भाग में वर्णन कर देने से भी हो सकती है, यह समझ कर हमने जादू के रहस्यों को संक्षेप में ही लिखा है।

—श्रीराम शर्मा आचार्य

जादूगरी या छल ?

जादू के खेल इन पंक्तियों के पाठकों ने अनेक बार अवश्य देखे होंगे। इन खेलों को देखकर सभी को आश्चर्य कौतूहल होता है। जैसे-जैसे ज्ञानका प्रकाश बढ़ता है वैसे २ लोगों की समझ में यह आता जाता है कि यह खेल है। इसका आधार हाथ की सफाई और चतुरता है। परन्तु फिर भी ऐसे अनेक लोग हैं जो जादू के खेलों में भी किसी भूत प्रेत का, देवी देवता का या सिद्धि साधना का आधार देखते हैं। अशिक्षित, अनजान, भोले भाले, छलछिद्रों के वातावरण से दूर रहने वाले, ग्रामीण ही नहीं, पढ़े लिखे शहरी और अपने को शिक्षित कहने वाले लोग भी भ्रम में पड़ जाते हैं और वे इन खेलों में किसी अदृश्य सत्ता का हाथ देखने लगते हैं।

अपरिपक्व बुद्धि के नवयुवक एवं अंध विश्वास के वातावरण में पले हुए तथा अदृश्य देवी देवताओं पर अधिक भरोसा करने वाले वयोवृद्ध लोग विशेष रूप से इन कौतूहलों से प्रभावित होते हैं। हमें भी अपने जीवन के आरंभिक दिनों में ऐसे ही वातावरण में होकर गुजारना पड़ा है। बालकपन में गांव में बाजीगरों के अनेकों प्रकार के खेल हमने देखे थे। हमारी जन्मभूमि खुश हाल लोगों की बड़ी बस्ती में है, वहां भिक्षुक वृत्ति के लोग बहुत आया करते थे। रीछ वाले, बन्दर वाले, नट, बाज़ीगर, गवैये, स्वांगिये, रासधारी,

बाबाजी जैसे लोगों का तांता लगा ही रहता था। उनके अनोखे अनोखे चरित्र बड़ा कौतूहल उत्पन्न करते थे।

इन सबको देखने में हम बड़ा रस आता था। बाजीगरों के खेल इन सबमें विशेष रूप से प्रिय लगते थे क्योंकि उनमें रहस्य छिपे रहते थे। मनुष्य का स्वभाव छिपी हुई बातों को, रहस्य मय भेदों को, जानने के लिए विशेष रूप से उत्सुक होता है। जादूगर के तमाशे ऐसे अद्भुत होते हैं कि उनका कारण समझ में नहीं आता। अनहोनी बातें जो संसार की साधारण व्यवस्था में आमतौर से दृष्टि गोचर नहीं होती पर जादूगर उन्हें कर दिखाता है। यह असाधारण, अलौकिक प्रदर्शन साधारण बुद्धि को स्तम्भित कर देता है। मस्तिष्क उसका कारण ढूंढ नहीं पाता, और संभ्रम में पड़ा रहता है। हमारी भी यही दशा थी। अपनी अपरिपक्व बुद्धि कुछ निर्णय निकालने में समर्थ न थी। बाजीगर खेल करते समय बीच-बीच में देवी देवताओं का आह्वान करता था और मंत्र पढ़ता था इससे दर्शक पर यह प्रभाव पड़ता था कि यह अद्भुत बातें देवताओं के अथवा मंत्रों के बल से होरही हैं। घर आकर जब बड़े बूढ़ों से पूछते तो वह भी "भेवड़े की विद्या", 'देवी की सिद्धि' आदि बातें कहते थे। उस समय जादू के रहस्य हमारे लिए एक प्रमुख पहेली थे।

खेल देखने के बाद कभी-कभी मस्तिष्क में विचारों कल्पनाओं और आकांक्षाओं की घुड़दौड़ मच जाती। यदि यह विद्या हमें आजाय तो फिर बड़े बड़े काम किये जा सकते हैं। हाथ में धूल लेकर ऊपर से लकड़ी फिरा कर रुपया बना लिया करेंगे। इस प्रकार दो चार हजार रुपया नित्य बनाये

जासकते हैं। बाजीगर जैसे पिटारी में खरगोश, कबूतर, न्योला आदि बना देता है वैसे ही हम घोड़े, गाड़ी, गाय, भैंस आदि जब चाहे तब बना लिया करेंगे। तरह तरह की चीजें देवी देवताओं के द्वारा मंगाना और पास की चीजों को गायब कर देना कितनी बड़ी शक्ति है। मित्रों के लिए, स्वजनों और संबंधियों के लिये उनकी जरूरत की चीजें तुरन्तु मंगालिया करेंगे और जो हमसे लड़ाई झगड़ा करेगा उसकी चीजों को जादू के जोर से उड़ा दिया करेंगे। फिर तो चारों तरफ हमारी धाक बंध जायगी, जहां जाओ वहीं राजाओं की सी आवभगत होगी। इस प्रकार की अनेकों आशा उत्साह और वैभव की रंग बिरंगी कल्पनाएं मन में घुमड़तीं पर वे जहाँ की तहां रह जातीं। अपने जादूगर बनने का कोई मार्ग समझ में न आता था, कोई उपाय सूझ न पड़ता था।

गांव के स्कूल की पढ़ाई समाप्त करके आगे की शिक्षा के लिए शहर में आना पड़ा। वहां भी कई बार एक से एक आश्चर्य जनक खेल देखे। देहाती फूहड़ बाजीगरों की अपेक्षा इन शहरी सफेद पोश जादूगरों के खेल और भी अधिक आकर्षक होते थे। बचपन की अटपटी कल्पनाएं तो अब न उठती थीं, इतना तो समझ में आगया था कि यह सब बना-वटी बातें हैं परन्तु तो भी उनके प्रति काफी आकर्षण था, जिस प्रकार जादूगर लोग दूसरों को आश्चर्य में डालकर अपना सिक्का जमाते हैं, वैसी स्थिति प्राप्त करना भी कुछ कम आकर्षक न जँचता था। मन में यह इच्छा उठा करती थी कि किसी प्रकार "जादूगरी विद्या" सीख पाते तो बड़ा अच्छा होता।

इच्छा में प्रबल शक्ति है। वह ऐसे ही अवसर प्रस्तुत करती रहती है जिससे अभीष्ट वस्तु प्राप्त हो सके। जादूगरों और बाजीगरों से सम्पर्क स्थापित करने की दिशा में कदम उठाया गया। वेलोग अपनी भेद भरी रोजी का रहस्य प्रकट करके अपना व्यापार नष्ट करने के लिए आसानी से तैयार नहीं होते। अपने भेदों को बड़ी सावधानी से छिपाये रहते हैं। उन लोगों के इन मनोभावों के कारण सफलता बड़ी कठिनता से, बहुत धीरे-धीरे काफी धन खर्च करने और शिष्यत्व स्वीकार करके अत्यन्त विनम्र सेवा चाकरी करने पर मिली। थोड़ा-थोड़ा करके स्कूली शिक्षा में साथ-साथ पाच वर्ष में जादूगरी भी सीख ली इन खेलों के सीखने में लगभग एक हजार रुपया हमें खर्च करना पड़ा और इतना समय लगाना पड़ा जिससे शिक्षा में काफी बाधा पड़ी, एक वर्ष तो फेल होते-होते ईश्वर की कृपा से ही बच गये।

जो खेल हमने सीखे हैं। उनकी सख्या इन पृष्ठों पर लिखे हुए खेलों की अपेक्षा अनेक गुनी है। उन सबको लिख इस मँहगाई के समय मे अधिक कागज खर्च करने की कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। इनमें से कितनों ही की तो याद भी नहीं रही है कितने ही ऐसे हैं जो इन पृष्ठों पर लिखे हुए खेलों के आधार पर ही होते हैं। केवल वस्तुएँ बदल जाती है, जैसे अँगूठी गायब करके बक्स के अन्दर से निकालना, और रुपया गायब करके लिफाफे में से निकालना, यह दो खेल देखने में अलग २ दिखाई पड़ते हैं पर तरीका एक है। एक-एक तरीके से वस्तुऐं बदल-बदल कर सैकड़ों खेल बनाये जासकते हैं। इस प्रकार दस पांच तरीकों के आधार पर ही हजारों खेल दिखाये जा सकते हैं। इतना विस्तार

करने का न तो हमें समय है और न पाठकों का लाभ। इन पृष्ठों को लिखने का केवल मात्र हमारा प्रयोजन यह है कि जिन लोगों को जादूगरी के खेलों को देखकर विशेष कौतूहल होता है और जो उनका ठीक कारण न जानने के कारण मनमें गलत धारणायें स्थापित करते हैं उनका भ्रम निवारण होसके। अपरिपक्व अवस्था में हम स्वयं जितने इस दिशामें आकर्षित हुए थे, इसके आधार पर बड़ी-बड़ी निराधार कल्पनायें करने लगे थे, तथा सीखने में बहुमूल्य समय एव इतना धन व्यय करने को उद्यत हुए, संभव है अन्य व्यक्ति भी इसी प्रकार लालायित हों उनकी उत्सुकता को शान्त करने के लिए यह पंक्तियाँ लिखी जारही हैं। हमारे पास प्रतिदिन सैकड़ों पत्र आते हैं, उनमें से नित्य अनेक पत्र ऐसे भी आते हैं जिनमें जादूगरी और योगका क्या संबंध है इस विषय में जिज्ञासा प्रकट की जाती है। कितने ही पाठक इन खेलों को सीखने की उत्सुकता प्रकट करते हैं ऐसे लोगों की उत्सुकता इन पृष्ठों को पढ़ने से दूर होजायगी।

जादूगरी के खेलों में छल प्रधान है। हर एक खेल इस मनोवैज्ञानिक तथ्य पर निर्भर है कि छलसे मनुष्य को धोखे में डाला जा सकता है। कोई व्यक्ति कितना ही चतुर तार्किक एवं होशियार क्यों न हो उसमें कुछ न कुछ विश्वास का अंश होता ही है। इस विश्वास के छोटे अंश के साथ ही छल किया जाता है और दर्शक भ्रम में पड़ जाते हैं। किसी खेल को दिखाते समय जादूगर मोटे तौर पर संदेह निवारण करा देता है, दर्शक उतने से ही सन्तुष्ट हो जाता है और अधिक गहराई में नहीं जाता. बस उसी भूल के लाभ उठाकर जादूगर अपने करतब करता है और अपनी सफलता

पर प्रसन्न होता है । यदि दर्शक बिलकुल अविश्वासी बन जावे और ज़रा भी विश्वास न करे हर चीज़ की तलाशी ले, तो सारी जादूगरी धूलि में मिल सकती है । चुनौती देकर एक भी खेल कोई आदमी नहीं दिखा सकता ।

इन खेलों को दिखाने से मनुष्य का स्वभाव धोखा देने का, छल करने का और दूसरों के विश्वास का अनुचित लाभ उठाने का अभ्यास पड़ता है । यह बातें धीरे-धीरे स्वभाव में शामिल होजाती हैं, जिससे मनुष्य का सदाचार चरित्र बल, नैतिकता, सात्विकता, पवित्रता, सरलता एवं सद्भाव नष्ट होता है । तेजाब को शरीर के किसी भी भाग में कितनी ही कम मात्रा में प्रयुक्त क्यों न किया जाय वहां हानि पहुंचाये बिना नहीं रह सकता । इस प्रकार छल चाहे मनोरंजन के लिए ही क्यों न किया जाय उसके मन में आने से आत्मिक पतन ही होता है । इस लिए अपने प्रिय पाठकों को हमारी यही सलाह है कि वे इन खेलों का रहस्य समझ कर इन की निरर्थकता का अनुभव करलें, इनकी ओर प्रवृत्ति न बढ़ावें, अब आगे के पृष्ठों पर कुछ खेलों का तरीका बताया जाता है ।

ताशों के खेल

दर्शकों को चारों रंग के (ईंट, पान, चिड़ी, हुकम) के इक्के दिखाइये । अब इनमें से एक इक्का हटा कर अलग रख दीजिये और उसके स्थान पर एक पंजा लगा लीजिये । बस, अब शेष तीन इक्के भी पंजे बन जावेंगे ।

इस खेल का रहस्य यह है कि तीन पंजे पान ईंट के लेकर उनके नीचे के दो बूंदें रेगमाल से घिस देनी चाहिए। अब इन तीन पत्तों में दो ऊपर की और एक बीच की केवल तीन बूंदें रह जावेंगी। इन पत्तों को दिखाते समय उन्हें तिरछा एक के ऊपर एक लगाना चाहिए जिससे हर एक ताश की दो बूंदें ऊपर वाले दूसरे ताश से ढक जायें सिर्फ बीच की एक बूंद दिखाई पड़े। यह एक बूंद ही दीखने के कारण यह ताश इक्का प्रतीत होता है। सबसे ऊपर हुकम का इक्का लगाना चाहिए क्यों कि एक तो आमतौर से विशेष आकृतिका होता है दूसरे एक पूरा इक्का तो रखना ही पड़ेगा। इस लिए हुकुम का इक्का ऊपर लगा कर चारों पत्ते दिखाते हैं इसे देखने पर किसी को यह शक नहीं होता कि यह चारों ताश इक्के नहीं हैं।

अब एक हुकम का पंजा लीजिए और उसे हुकम के इक्के के स्थान पर रख दीजिए। यह हटाने की तथा रखने की क्रिया इस सफाई से होनी चाहिए कि नीचे वाले नकली इक्कों का भेद प्रकट न होने पावे। अब इन चारों पत्तों का नीचे का भाग ऊपर की ओर, और ऊपर का नीचे ओर कर दीजिए। पहले जैसे एक के ऊपर एक ताश तिरछा रख कर बूंदें दबा दी गई थीं उसी प्रकार इस बार घिसा हुआ भाग दबा कर तीनों बूंदें प्रकट कर देनी चाहिए। ऊपर पंजा होने से यह सब पत्ते पंजे ही दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार एक ताश बदलने से चार ताश बदलने का खेल हो जाता है लोग इससे बहुत आश्चर्य करते हैं।

(८) चार रंग के चार बादशाह दिखाइए। उनमें से

एक बादशाह हटा कर उनके स्थान पर एक सत्ता रख दीजिए, चारों ताश सत्ता बन जावेंगे।

इस खेल का आधार तो पहले खेल का सा ही है पर अन्तर यह है कि उस में पंजों की नीचे की बूंदें घिस दी जाती थीं, इसमें एक कोने से दूसरे कोने तक तिरछा (त्रिभुजाकार) तीन बादशाह काटे जाते हैं और उन्हें तीन सत्तों पर चिपका देते है। इस प्रकार तिकोने आकार में वह ताश आधे बादशाह और आधे सत्ते होते है। दिखाते समय तिरछे एक के ऊपर दूसरा ताश रखकर दिखाते हैं। ऊपर पूरा ठीक ताश रहता है। जब बादशाह को सत्ता बनाना होता है तो ऊपर वाले पूरे बादशाह को हटा कर उसके स्थान पर पूरा सत्ता रख देते हैं और नीचे के तीन ताशों का बादशाह वाला भाग छिपा कर सत्ते वाला भाग खोल देते है।

(३) एक हाथ में एक ताश लेकर दिखाया जाता है, दूसरे हाथ को खाली दिखाया जाता है। खाली हाथ को उस ताश के ऊपर फिरा देने से वह दूसरी आकृति का बदल जाता है इस प्रकार चार बार हाथ फेरने पर वह एक ही ताश चार रंग पलटता है और और फिर अपने असली रूप में आता है।

इसका भेद यह है कि चार ताश लेकर उनको ठीक बीच में से लम्बाई की ओर आधा मोड़ के—एक ताश के आधे भाग की पीठ दूसरे ताश की आधे भाग की पीठ से चिपकाते हैं। इस तरह चार ताशों की आधी-आधी पीठ आपस में एक दूसरे से चिपक जाती है।

दिखाते समय बाएं हाथ में एक ताश को पूरा पूरा

दिखाते हैं, तीन ताश उसकी पीठ पर चिपके रहते हैं। हाथ में पकड़ते समय सावधानी रखी जाती है कि कहीं बीच से मुड़ न जाय या पीठ के चिपके ताश दिखाई न दे जांय। दूसरे हाथ को मंत्र चलाने जैसी मुद्रा बना कर उस ताश पर हाथ फेरते हैं। इसी बहाने एक पत्ते को पलट दिया जाता है जिससे दूसरी आकृति सामने आजाती है। इसी प्रकार हाथ फिराने से चार प्रकार के ताश दिखाई देते हैं।

(४) एक कोने पर एक ताश को पकड़ कर दर्शकों को दिखाते हैं यह छक्का होता है। उसे जरा सी हवा में हिलाने पर चौआ हो जाता है। ताश को दोनों ओर से दिखा देने पर और दूसरे हाथ का स्पर्श न होने पर यह खेल बहुत आश्चर्य जनक और बिना लाग लपेट का मालूम पड़ता है।

रहस्य यह है कि किसी भी रंग का एक छक्का लेकर उसके बीच की बूंदों में से एक ओर की एक बूंद रेगमाल से या चाकू से मिटा देते हैं खेल दिखाते समय अंगूठा और तर्जनी के सहारे उस छिले हुए स्थान को पकड़ कर दिखाते हैं, दर्शक पांच बूंदें देखते हुए भी उसके छक्का होने का विश्वास कर लेते हैं। ताश को जरा हवा में हिला कर इसे दूसरी तरफ बदल देते हैं और छिले हुए स्थान की बराबर वाली बूंद को उंगली और अंगूठे से दबा देते हैं। अब यह चौआ दीखने लगता है।

(५) ताशों की एक गड्डी लेकर उसमें सारे किस्म के पत्ते दर्शकों को दिखा दीजिए। अब इस गड्डी को लेकर सब दर्शकों के पास जाइए और कहिए कि एक पत्ता निकाल कर पहचान लें और उसे मन में याद रखें। इसी प्रकार

स्वेच्छापूर्वक सबको पत्ते निकालने और पहचान कर मनमें याद रखने के लिए कहें। जब दस बीस पचास चालीस आदमी अपने-अपने पत्ते पहचान चुकें तो गड्डी को उठा कर एक ओर रख दीजिए और केवल एक ताश हाथ में लेकर चलिए। लोगों से कहिए कि मेरे हाथ में यह जादुई ताश है यह सब लोगों के पहचाने हुए इस ताश की शक्ल में बदल जाता है। उस ताश को जिसे भी दिखावेंगे वहीं कहेगा कि—यही मैंने पहचाना था।

इस खेल का भेद यह है कि कोई एक ताश २६ की संख्या में लिया जाता है। २६ गड्डी पैकिटों में मान लीजिए आपने चिड़ी की २६ बेगमें निकाल लीं। इनको नीचे ऊपर जरा-जरा सा कैंची काट दीजिए। काट देने से वह अन्य ताशों की अपेक्षा कुछ छोटी हो जावेंगी। अब इस क्रम से पत्ते लगाये जांय कि एक बेगम-एक सादा, एक बेगम-एक सादा. इस प्रकार बनाई हुई गड्डी के नीचे भाग को हाथ में पकड़ लिया जाता है और ऊपर भाग को जल्दी-जल्दी फर्राटे के साथ लोगों को दिखाते हैं और उन पत्तों के बीच में उँगली डाल कर एक ताश निकालने के लिए कहते हैं। दर्शक उँगली डालेगा उसके नीचे बेगम ही निकलेगी। इस प्रकार हर एक दर्शक एक ही पत्ता पहचानेगा। कोई अपना पहचाना हुआ पत्ता दूसरे को न बतावे यह पहले से ही हिदायत कर दी जाती है। इसलिए हर दर्शक यह समझता है सबने अलग-अलग आकृति के ताश पहचाने होंगे। जादूगर उस एक बेगम को लेकर निकालता है और छिपा कर हर पहचानने वाले को दिखाता है। वह स्वीकार करता है कि हां यही मैंने पहचानी था। इस प्रकार सबको बहुत

अचंभा होता है। बेगमों का नीचे ऊपर से काट देने पर वह छोटी होजाती है और फराटे के साथ दिखाते समय वह पूरे पत्ते की पीठ से सट जाती है। इस लिए गड्डी में वह कहीं भी दिखाई नहीं पड़ती किन्तु जहां भी हाथ डालो वहीं नीचे वही निकलती है।

(६) एक गड्डी ताश लेकर अनेक लोगों को एक-एक ताश सबको पहचनवा दीजिए अब एक कांच के गिलास में पानी भर लीजिए हर एक पहचानने वाले को पानी भरा गिलास दिखाइए। इस पानी में पहचाने हुए ताश का चित्र दिखाई पड़ेगा। सब लोग अपने-अपने पहचाने हुए ताश का चित्र पानी में देखकर बहुत प्रसन्न होते हैं।

यह खेल बिलकुल ऊपर के खेल के समान है। एक प्रकार के २६ ताश थोड़े-थोड़े झाड़ कर उपरोक्त प्रकार की गड्डी बनाई जाती है। उसी प्रकार एक ताश को सब लोग पहचानते हैं। अब अन्तर केवल यह रह जाता है कि पहले खेल में उस ताश को निकाल कर जादूगर हर एक पहचानने वाले को दिखाता था, इस खेल में पानी का भरा गिलास दिखाता है।

कांच के गिलास को उलटा करके उसके बाहर वाले पेंदे में उस ताश को चिपका देते हैं जो लोगों ने पहचाना है। बाजार में छोटे बच्चों के खेलने के एक दो पैसे वाले छोटे ताश बिकते हैं। इनमें चिपकाने के लिए ताश लेना चाहिए क्योंकि पूरा पत्ता गिलास के छोटे पेंदे में आ नहीं सकता। कांच के गिलास में पानी भर देने पर नीचे पेंदे में लगा हुआ ताश दिखाई पड़ता है। देखने समय ऐसा मालूम पड़ता है मानों पानी के बीच में किसी अद्भुत प्रकार से चित्र अंकित हो रहा है।

(७) कांच की बोतल के मुँह पर एक ताश खड़ा करते है। इसके ऊपर एक गिलास रख देते हैं। गिलास का वजन लेकर पत्ते का इस प्रकार खड़ा रहना देखने वालों को अचंभे में डाल देता है।

इस खेल के लिए मजबूत बढिया किस्म के दो ताश लिए जाते हैं। एक कार्ड ज्यों का त्यों रहता है दूसरे को बीच में आधा पीछे की ओर मोड देते हैं। फिर उस मुड़े हुए कार्ड का आधा भाग पूरे कार्ड से चिपका देते है। शेष आधा खुला हुआ रह जाता है। जब खेल दिखाना होता है तो पीठ पर चिपके हुए ताश का बिना चिपका भाग पीछे की ओर मोड़ देते है। जो कि पीछे तिपाई की तरह अड़ जाता है और खड़ा रहने एवं वजन साधने में सहायक स्तम्भ की तरह कारगर सिद्ध होता है।

(८) ताश की एक गड्डी लेकर उसे सबके सामने बहुत देर तक फेंटते रहिए। फिर ऊपर का एक पत्ता पकड़ कर ऊँचा उठा दीजिए वे एक दूसरे से चिपटे हुए जंजीर बन कर ऊपर उठ जायेंगे देर तक फेंटते रहने के कारण यह भ्रम तो रहता नहीं कि वे एक दूसरे से चिपके होंगे, बिना चिपके हुए ताशों का एक दूसरे से सटकर जंजीर की तरह ऊपर उठना अचरज की बात मालूम पड़ती है।

भेद यह है कि दो तिहाई ताश तो बिलकुल सादा रखे जाते हैं। एक तिहाई आपस में इस प्रकार चिपकाये जाते है कि एक का सिर दूसरे के पैर आपस में चिपकें इस प्रकार इन तिहाई ताशों को फेंटते समय एक साथ फेंटते हैं। शेष को थोड़ा २ करके फेंटते रहते हैं। जब जंजीर

पहचानी होती है तो इन चिपके हुए ताशों ही को ऊपर उठा देते हैं।

(९) ताश की गड्डी लेकर दर्शक के आगे रख दीजिए और कहिए कि इसमें से कोई भी ताश निकाल कर पहचान ले। जब पहचान चुके तो उसे वापिस उसी गड्डी में कहीं रखवा दीजिए और उसी के हाथों खूब फेंटवा दीजिए ताकि किसी प्रकार का सन्देह न रहे। अब आप आंख से पट्टी बांध कर गड्डी को हाथ में लेते ही उस पहचाने हुए ताश को निकाल कर दे सकते हैं।

भेद यह है कि इस गड्डी को दोनों बगलों के नीचे वाले हिस्से को रेगमाल से थोड़ा थोड़ा घिस दिया जाता है। जिससे उधर का भाग जरा छोटा पड़ जाता है। जैसे ही कोई दर्शक गड्डी में से पत्ता खींच कर अपने पास लेजाय वैसे ही जादूगर उसे इधर से उधर को फेर देता है। दर्शक जब वापिस उस पत्ते को गड्डी में मिलाता है तो उसका बड़ा ऊपर वाला भाग अन्य पत्तों के नीचे के छोटे भाग की ओर हो जाता है। आँखों पर पट्टी बांध कर टटोलने से मालूम पड़ जाता है कि जिस ताश का कोना बढ़ा हुआ है। उसे ही निकाल कर बता दिया जाता कि यह पहचाना गया था।

(१०) दर्शक जो ताश पहचाने ताश को उसी गड्डी में मिलवा दीजिए। आवाज देने पर वह ताश उछल कर दूर जा गिरेगा।

कारण यह है कि उन्हीं ताशों के बीच में नीचे की ओर लचीली रबड़ का टुकड़ा बांध देते हैं। नं० ५ या नं० ६ के तरीके से दर्शक को कोई ताश पहचनवाते हैं जिससे वह

तो तुरन्त मालूम हो जाता है कि इसने कौनसा पत्ता देखा था। उसी ताश को रबड़ लगे के बीच में लगा देते हैं और हाथ से दबा के पकड़े रहते हैं। जब आवाज देते हैं कि "पहचाना हुआ ताश बाहर निकले" तो हाथ को जरा ढीला कर देते हैं। ढील पाते ही रबड के दबाव के कारण ताश उछल कर दूर जा गिरता है।

(११) लोगों का पहचाना हुआ ताश गड्डी में से अपने आप दो फुट ऊपर उड़ता हुआ जादूगर के दूसरे हाथ में पहुंचता है। जादूगर उसे सबको दिखाता है। ताश के अपने आप ऊपर उड़ने का दृश्य बड़ा मनोहर होता है।

इस खेल का भेद यह है कि जादूगर काला कोट पहनता है। कोट में काले बटन होते हैं। बटन में काला रेशमी बारीक डोरी या लम्बा बाल बँधा होता है और बाल के दूसरे सिरे पर मोम और राल मिलाकर बनाया हुआ चिपकना गाढ़ा मसाला लगा होता है। पीछे बताये हुए तरीकों से यह मालूम होता है कि कौन सा ताश दर्शक ने पहचाना है। उसकी पीठ पर चिपकना मसाला आहिस्ता से चिपका देता है और दूसरे हाथ को ऊपर उठाता है। हाथ को उठाने के साथ ही डोरे को ऊपर उठाता है जिससे ताश ऊपर उठता है और जादूगर के दूसरे हाथ से जा सटता है।

रूमाल के खेल।

(१२) एक रुपया लेकर रूमाल के बीचों बीच रखिए और उसे किसी आदमी के हाथ में दे दीजिए, उस आदमी

से कहिए कि रुपये को ज़ोर से पकड़े रहे कहीं उड़ न जावे। थोड़ी देर इधर उधर की बातें करके रुमाल को उसके हाथ से लीजिए रुपया कहीं भी न मिलेगा।

कारण यह है कि रुमाल के चारों किनारे एक-एक इंच चौड़े दुहरे सिलवाये जाते हैं उसके एक कोने पर किसी धातु का बना हुआ रुपये जैसा गोल टुकड़ा सिलवा देते हैं। जिस समय किसी आदमी को रुपया समेत रुमाल पकड़ने के लिए दिया जाता है उस समय सफाई के साथ रुपये को तो निकाल लेते हैं और कोने में सिले हुए गोल टुकड़े को उसके हाथ में पकड़वा देते हैं, पीछे जब रुमाल वापिस लिये जाता है तो उसमें कुछ नहीं निकलता। सिले हुए टुकड़े वाले कोने को पकड़ कर जादूगर इस रुमाल को भली प्रकार हिला-डुला देता है, जिससे सन्देह का निवारण हो जाता है।

(१२) एक पीतल या कांच का गिलास रुमाल से ढंक कर किसी आदमी के हाथ में पकड़वा दीजिये। थोड़ी देर इधर-उधर की बातें करने के बाद रुमाल वापिस मांगिए और उसे सब लोगों के सामने झाड़ दीजिए—उसमें गिलास नहीं निकलेगा।

जिस प्रकार रुमाल गायब करने वाले खेल में एक कोने पर रुपये की शकल का धातु का टुकड़ा सीं दिया जाता है वैसे ही इस खेल में एक कोने पर उस छोटे गिलास की बराबर कांच की चूड़ी सी दी जाती है। रुपये को पकड़ते समय तो दर्शक रुमाल को मुट्ठी में पकड़ता है पर गिलास पकड़ने का तरीका दूसरा है। पांचों उँगलियों से चूड़ी के किनारों को इस प्रकार लटकता हुआ पकड़वा देते

है जैसे लोटे को हाथ में लटका कर टट्टी के लिए ले जाते हैं। इस प्रकार पकड़ने से रुमाल नीचे की ओर झूलता रहता है और पकड़ने वाले को यह पता नहीं चल पाता कि उसके हाथ में चूड़ी है या गिलास। गिलास जैसी बड़ी चीज के हाथों हाथ गायब होने का लोगों को बहुत अचंभा होता है।

(१४) कोई डिब्बा, टोप या टोकरी खाली दिखाइए। थोड़ी देर में इसमें से ढेरों रुमाल निकाल निकाल कर दिखाते जाइए। खाली हाथ दिखाकर हाथों में से भी अनेकों रुमाल निकाल कर दिखाये जा सकते हैं।

इस खेल के लिए बहुत ही बारीक रेशम के छोटे छोटे रुमाल तैयार किये जाते हैं। इनकी तह करके दबा-दबा कर रखा जावे तो थोड़ी जगह में दर्जनों रुमाल आ सकते हैं। उन्हें लपेट कर एक छोटी गेंद सी बनाली जाती है। खेल दिखाते समय टोप, डिब्बा, टोकरा खाली दिखाया जाता है। इसके बाद उसे मेज पर रखते समय, या हाथ में जादू का डंडा उठाते समय उस गेंद को मेज पर से उठा लेते हैं और फिर रुमालों को खोल कर ढेर लगाते हैं।

(१५) एक रुमाल लेकर दर्शकों के सामने जला दीजिए। आवाज देने पर मेज के ऊपर रखी हुई सफेद बोतल के भीतर रुमाल अपने आप ऊपर उठता नजर आवेगा।

इस खेल के लिए एक ही किस्म के दो रुमाल लिये जाते हैं। एक सफेद बोतल का पेंदा काच काटने वालों से कटवा कर अलग करवा लिया जाता है। इस बिना पेंदे की बोतल में नीचे की ओर एक अंगुल ऊँचाई तक काला रंग लगा देते हैं। इस बोतल के भीतर एक रुमाल रख दिया

जाता है। और उसके एक कोने में बोतल के रंग का पतला रेशमी डोरा बांध कर बोतल के मुँह से ऊपर निकाल दिया जाता है।

एक रूमाल को दर्शकों के सामने जलाने देने के बाद बोतल में पड़े हुए डोरे को दूर से खींचते हैं डोरे के सहारे रूमाल ऊपर उठने लगता है लोग समझते हैं कि जला हुआ रूमाल बोतल के अन्दर फिर से पैदा हो रहा है।

(१६) जादूगर एक मोटा कागज सबको दिखाता है। उसको लपेट कर गोल पोला फूंकना सा बना देता है। उस में एक सिरे से सफेद रूमाल ठूंसने आरंभ किये जाते हैं, वह दूसरी ओर से रंग बिरंगे बनकर निकलते है। सादा कागज के फूंकने को उस प्रकार रंगाई का कारखाना देख कर लोगों को बड़ी हैरत होती है।

इस खेल का रहस्य यह है कि कागज को गोल करके फूंकने बनाते समय रंगीन रेशमी रूमालों को एक छोटी सी पोटली बीच में रख देता है। एक सिरे से सफेद रूमाल ठूँसना है। दूसरी ओर से वे बीच में रखे हुए रंगीन रूमाल सरक-सरक कर बाहर निकलने लगते हैं जब सब रंगीन रूमाल निकल चुकते हैं तो जादूगर दर्शकों को कहता है कि आप ऐसा न समझें कि इस कागज के फूंकना के भीतर कोई चोरी की बात है। उस कागज को वह फिर खोल कर चौरस कर देता है उसके भीतर सिर्फ सफेद रूमाल ही होते हैं। देखने वालों को जादूगर की विद्या पर विश्वास हो जाता है।

[१७] जादूगर एक रूमाल हाथ में लेकर एक बोतल में ठूंसता है। फिर दर्शकों को कहता है कि यह रूमाल उचट

है मानों रुपया रक्खा रहा है। इस गिलास को जरा पानी से तर कर लेते हैं जिससे गिलास उलटा करके दिखाने पर भी पेंदे में पड़ा हुआ कांच का गोल टुकड़ा उसी में चिपक कर रह जाता है। गिरता नहीं।

(२०) एक कांच के गिलास में काली स्याही पोत कर ले जाइए और चम्मच से निकाल-निकाल कर लोगों को दिखाइए। इसके बाद दर्शकों से कहिए कि आप लोग होशियार बैठें मुझे होली खेलनी है इस स्याही को आप लोगों के ऊपर फेंकूंगा थोड़ी देर बाद उस गिलास को दर्शकों की ओर फेंकिए, स्याही की बजाय बढ़िया फूल गिरेंगे।

इस खेल के लिये दो कांच के गिलास तैयार किये जाते हैं। एक गिलास में काली स्याही पानी में घोल कर रखते हैं। दूसरे में मोटा काला कपड़ा लेकर गिलास के भीतर आ सकने लायक ठीक नाप का एक खोल बना लेते हैं। उस खोल को कांच में भीतर फिट करके अन्दर फूल भर देते हैं दोनों गिलासों को काले रूमाल से ढक कर मेज पर बराबर २ रख देते हैं। फूल वाले गिलास का काला रूमाल के एक कोने पर आलपीन या सुई डोरे से टांका होता है।

पहली बार स्याही वाला गिलास लेकर जादूगर निकालता है और चम्मच से निकाल २ कर सबको स्याही दिखा आता है। अब उसे लौटा कर मेज पर रख देता है। और एकाध बात इधर उधर की कहने लगता है। इसके बाद गिलास उठाता है उठाने में यह चालाकी की जाती है कि पहले की बजाय दूसरा गिलास उठा लिया जाता है, चूंकि उसके भीतर काला कपड़ा लगा होता है। इसलिए

किसी को संदेह नहीं होता कि गिलास बदला गया है। अब जादूगर रुमाल पकड़ कर गिलास के पानी को दर्शकों की ओर फेंकता है, पर स्याही के स्थान पर फूल बरसते हैं। क्योंकि उस गिलास में पहले से ही फूल रखे हुए थे।

(२१) एक कांच के गिलास में लाल रंग भर लिया जाता है और जादूगर कहता कि पहली बार तो स्याही की जगह पर फूल बरसे थे पर अब की बार ऐसा न होगा। जिसके अच्छे कपड़े होंगे वे इस रङ्ग से रङ्गे जायेंगे। यह कह कर जादूगर एक चक्कर लगाता है और देखता है कि बढ़िया कपड़े किसके हैं, उसी के ऊपर रङ्ग उडेल देता है। कपड़े बिलकुल सुर्ख हो जाते हैं। कपड़े वाला नाराज होने लगता है तब जादूगर कपड़ों पर फूंक मारता है और रंग गायब होजाता है। कपड़े जैसे के तैसे हो जाते हैं।

यह रङ्ग खास किस्म से तैयार किया जाता है। लाय कर अमोनिया और फ्लोफ्तलीन नामक इंग्रेजी दवाओं की थोड़ी-थोड़ी मात्रा मिला देने से पानी का रङ्ग सुर्ख हो जाता है। थोड़ी देर में हवा लगते ही रङ्ग उड़ जाता है। इसे बेच-बेच कर दुकानदार खूब लाभ उठाते हैं।

(२२) एक कांच के गिलास में सबके सामने सादा पानी भरिए। सब प्रकार विश्वास करा दीजिये कि इसमें कोई खास बात नहीं है। अब इस गिलास को उलटा कर दीजिए पानी बिलकुल न फैलेगा।

इस खेल के लिए शराब पीने की कांच की प्यालियां सबसे अच्छी रहती हैं। उनके तले के ठीक बराबर सलो-लाइड, गटापार्चा या अभ्रक का गोल टुकड़ा काट लिया

जाता है। इस टुकड़े को पानी मे डुबो कर पेंदे से लगा दिया जाता है इससे वह ठीक तरह चिपका रहता है, गिरता नहीं। जब प्याली को उलटना होता है तब पेंदे में लगे हुए गोल टुकड़े को हथेली के सहारे से हटा कर प्याली के मुंह पर लगा देते हैं और उसे उलट कर देते हैं। वह टुकड़ा मुंह पर चिपक जाता है और पानी नहीं फैलता।

[२३] एक काच के गिलास को मुंह तक लकड़ी के बुरादे से भरा हुआ दिखाइए थोड़ी देर में यह बुरादा मिठाई बन जायगा।

इस खेल के लिए कांच के गिलास के भीतर फिट होने योग्य टीन का बिना पेंदे का गिलास जैसा ही एक खोल बनाया जाता है और उसका ऊपर का मुंह टीन से ही बन्द बनवाया जाता है। इस टीन के खोल के बाहर बाहर सब ओर सरेस पोत कर उस पर लकडी का बुरादा चिपका दिया जाता है गिलास के मुंह पर विशेष रूप से कुछ अधिक बुरादा लगा देते है जिससे गिलास ऊपर मुंह तक भरा हुआ मालूम दे। टीन के पोले खोल के अन्दर मिठाई भर दी जाती है। इस प्रकार बने हुए गिलास को दर्शकों को दिखाया जाय तो यह समझा जाता है कि काच के सारे गिलास में लकडी का बुरादा भरा हुआ है।

एक टीन या कार्ड का एक ऐसा खोल बनाया जाता है जो इस गिलास के ऊपर पूरी तरह ढकन की तरह आ आजाय। इस ढकन को खाली दिखाकर उससे गिलास को ढक देते हैं। कुछ देर बाद इस ढकन को जरा दबा कर इस प्रकार उठाते है कि गिलास के भीतर लगा हुआ टीन का पोला खोल उस ढकन के साथ ही खिंचा चला आता है और गिलास मे केवल मिठाई रह जाती है।

(२४) दो खाली गिलास मेज पर रखे जाते हैं। सिगरेट पीकर उसका धुंआं आकाश में फूंक दिया जाता है। दर्शकों से कहते हैं कि यह आकाश में उड़ता हुआ धुंआ मेरा कहना मानता है। जहां कहता हूं वहां चला जाता है। देखिए अब इस धुंए को एक गिलास से बन्द किया जाता है। फिर एक गिलास से दूसरे में भेजा जायगा। इस कथन को अक्षरशः चरितार्थ होते देखकर दर्शक बहुत आश्चर्य करते हैं।

रहस्य यह है कि गिलास के भीतर चारों ओर पेंसिल हाइड्रोक्लोरिक पोत दिया जाता है और गिलास ढकने की तश्तरी में लाइकर अमोनिया फोर्ट पोत दिया जाता है। तश्तरी गिलास पर ऊपर को मुंह करके रखी रहने देते हैं। जब गिलास में धुंआ पैदा करना होता है तो तश्तरी को उलट कर गिलास पर रख देते हैं दोनों दवाओं का आमना सामना होने पर धुंआ पैदा होने लगता है, ढक्कन रखा होने के कारण गिलास में धुंआं खूब भर जाता है। अब इस गिलास का धुंआ दूसरे गिलास में भेजना होता है तो धुंए वाले गिलास का मुंह खोल देते हैं उसका धुंआ निकल जाता है। दूसरे गिलास के ऊपर की तश्तरी उलटी करके रखते ही उसमें भी धुंआ पैदा होने लगता है. सिगरेट का, पहले गिलास का. दूसरे गिलास का, यह तीनों ही धुंए अलग २ हैं पर दर्शक समझते हैं कि एक ही धुंआ इधर से उधर जारहा है।

(२५) पीतल के दो सादा गिलास लेते हैं। एक को एक हाथ में पकड़ते हैं, दूसरे को ऊपर से उस गिलास के बीच में गिराते हैं। ऊपर वाला गिलास नीचे के गिलास के

पेंदे को पार करके नीचे निकल जाता है।

इस खेल में देखने वालों को दृष्टि भ्रम होता है। पीतल के छोटे ढाई तीन इञ्च के गिलास बाजार में बिकते हैं वे इस खेल के लिए अधिक उपयुक्त रहते हैं। गिलास को इस प्रकार पकड़ते हैं कि मध्यमा उंगली का पोरुआ और तर्जनी के सहारे से गोलाई में आधा गिलास के किनारे से सटा रहे और आधा ऊपर रहे। जब दूसरे गिलास को ऊपर से छोड़ते हैं और जब नीचे के गिलास में ऊपर का गिलास पहुंच जाता है तो तुरन्त ही जादूगर उंगली और अंगूठे का नीचे वाला हिस्सा ढीला करके ऊपर के गिलास का किनारा दबा देता है। फल स्वरूप नीचे वाला गिलास टपक पड़ता है और ऊपर का हाथ में रह जाता है। यह क्रिया इतनी जल्दी में होती है कि देखने वाले उसे समझ नहीं पाते उन्हें यही लगता है कि ऊपर वाला गिलास नीचे के गिलास का पेंदा पार करके नीचे गिरता है। जल्दी २ कई बार इस खेल को दुहराने से दर्शकों को बड़ा आनन्द आता है।

बिना सामान के हो सकने वाले खेल।

(२६) एक साबित केला दिखा कर लोगों से पूछा जाता है कि इसके गूदे को कितने टुकड़े में काट दिया जाय? लोग जितने टुकड़े में काटने को कहें छिलका उतरने पर उसके उतने ही टुकड़े निकलते हैं।

तरीका यह है कि जितनी जगह से जहां जहां केले से काटना हो वहां सुई चुभा कर भीतर ही भीतर चारों ओर घुमा दिया जाता है। गूदा कट जाता है और केला साबित बना रहता है। सुई का छेद अपने आप बन्द हो जाता है वह दिखाई नहीं पड़ता।

(२७) एक पैसा या रुपया किसी से लेकर हथेली पर रखिए। आवाज देते ही वह रुपया चलना शुरू कर देगा। हथेली पर से पहुंचे, पर होता हुआ रुपया कोहनी तक पहुंचेगा और ऊपर कन्धे की तरफ बढ़ेगा। जादूगर तब इसे दूसरे हाथ पर ले लेता है। फिर भी वह दौड़ता ही रहता है। कंधे के पास पहुंचने पर इसे फिर दूसरे हाथ पर लेना पड़ता है। इसी प्रकार बार बार हाथ बदलना पड़ता है। जब तक जादूगर चाहे तब तक रुपया दौड़ता ही रहता है। उसकी आज्ञानुसार रुपये की चाल धीमी व तेज भी हो जाती है।

इस खेल के लिए काले कपड़े पहनने पड़ते हैं। कमीज या कोट के बटन वाले छेद से एक काले रंग का बहुत पतला रेशमी डोरा या मनुष्य के सिर का लम्बा बाल लेकर उसका एक छोर बांध देते हैं। दूसरे छोर से अलकतरा में राख मिला कर उसकी छोटी गोली बना देते हैं रुपया लेकर जब चलाने का समय आता है तो उस अलकतरा की गोली को हथेली पर रख कर उस पर रुपये की पीठ चिपका देते हैं। अब हाथ को आगे बढ़ाना शुरू करते हैं, रुपया जहां का तहां रहता है डोरे या बाल से खिंचा रहने के कारण वह हाथ के साथ साथ आगे नहीं चलता। हाथ चलता है, रुपया नहीं चलता पर दर्शकों को ऐसा मालूम पड़ता है कि रुपया चल रहा है। हाथ बहुत आगे बढ़ जाने पर रुपया कुहनी तक पहुंच जाता है तब उसे दूसरे हाथ पर ले लेते हैं।

(२८) जादूगर हवा में हाथ मार कर एक रुपया बनाता है। दूसरे हाथ में एक डिब्बा पकड़े रहता है। बनाये हुए रुपये को डिब्बे में छोड़ता है। इसी प्रकार हवा

रहती है और शेष सब उँगली मुट्ठी बांधने की शकल में मुड़ी रहती है आदि जब एक हाथ से दूसरे हाथ में टोपी भेजने का इशारा करता है तो तर्जनी को मोड़ कर अन्य उँगलियों तथा अँगूठे की मोड़ के बीच में उस लोहे की टोपी को उतार देता है। दूसरे हाथ में उसी जगह दूसरी टोपी छिपी होती है उसे दूसरे हाथ की तर्जनी में पहन लेता है इस प्रकार वास्तव में एक उँगली की टोपी को जादूगर उतारता और दूसरे को पहनता रहता रहता है। पर मालूम ऐसा पड़ता है मानो एक ही टोपी इस हाथ से उस हाथ में जाती जाती है।

(३१) एक बेंत लेकर जादूगर उसके दोनों सिरे किसी आदमी के दोनों हाथों पकड़वाता है और बीच में रूमाल डाल देता है। अब एक अगूठी लेकर जादूगर उसे बेंत पर फेंकने जैसा ऐक्टिंग करता है दोनों सिरे पकड़े रहने पर भी अगूठी बेंत के बीच में पहुचती है और रूमाल हटाते ही बीच में पिरोई हुई दीखती है।

जादूगर बेंत के सिरे को किसी के हाथ मे पकड़वाते समय पहले ही उसमें अपनी अगूठी पिरो लेता है। पहले तो उसे अपने हाथ के नीचे छिपाये रहता है पीछे उसे रूमाल लपेट कर ढक देता है। रूमाल हटाते ही वह अंगूठी दीखने लगती है।

छुरी के खेल

(३२) एक छुरी लेकर लोगों को दिखाइए, थोड़ी देर इसे हवा में घुमाने पर उसकी नोंक पर सुन्दर फूल आकर लग जायगा।

यह छुरी इंग्रेजी उस्तरे की तरह पोली होती है। नीचे का भाग धार वाला होता है पर ऊपर वाला भाग पोला होता है। उस पोले भाग की जड़ से लेकर नोंक तक साईकिल के वालट्यूब की रबड़ डाल देते हैं। नोंक के पास एक फूल इस रबड़ से बांध दिया जाता है।

खेल दिखाते समय उस फूल को खींच कर पीछे ले जाते हैं रबड तन कर बढ़ जाती है और फूल पीछे खिंच जाता है। फूल को जादूगर मुट्ठी में दबा लेता है। इस प्रकार वह दीखता नहीं। पर जब हवा में छुरी फिराते हैं तो मुट्ठी में लगे हुए फूल को ढीला कर देते हैं। रबड़ सकुड़ जाती है और फूल छुरी की नोंक पर जा पहुंचता है।

(३३) एक चाकू लेकर किसी मनुष्य के पेट पर रखते हैं और जोर से दबा देते हैं। चाकू पेट में घुस जाता है और खून निकलने लगता है पर जब चाकू को पेट में से बाहर निकालते हैं तो कहीं भी घाव का निशान नहीं पड़ता। इस चाकू घुसने और निकालने में किसी को जरा भी कष्ट नहीं होता।

इस खेल के लिए जो चाकू बनाया जाता है वह मुड़दार बन्द नहीं होता वरन् खुला ही रहता है और उसकी नोंक सपाट होती है। इसकी बेंटी पोली होती है और भीतर स्प्रिंग लगे होते हैं जिनके दबाव के कारण चाकू का फल

यथावत खड़ा रहता है। पर जब उसे पेट पर रख कर दबाते हैं तो चाकू का फल स्प्रिंगों को दबाता हुआ बेंटी में भीतर घुसने लगता है। फल का बेंटी में घुसना दर्शकों को ऐसा मालूम होता है मानो इतना भाग पेट में घुस गया हो। बेंटी के भीतर लाल रंग में डुबाकर स्पंज रख दी जाती है जो स्प्रिंगों का दबाव पाकर निचुड़ पड़ती है यही रक्त खून जैसा दिखाई पड़ता है। चाकू को पेट पर हटाते ही स्प्रिंगों को दबाव से फल बाहर निकल आता है। चूंकि चाकू पेट में घुसा ही न था इस लिए घाव होने या कष्ट होने का कोई कारण ही नहीं होता।

(३४) नाक, गरदन, हाथ या किसी अन्य अङ्ग से एक छुरी या तलवार मारी जाती है तलवार का बीच का हिस्सा उस अङ्ग में काफी गहरा घुस जाता है। इस प्रकार घुसी हुई तलवार को यों ही अधर लटकती छोड़ देते हैं। बिना किसी लाग लपेट के इस प्रकार स्पष्ट रूप से शरीर में घुसी देख कर दर्शक बहुत आश्चर्य करते हैं।

इस खेल के लिए खांचेदार छुरी या तलवार बनाई जाती है जिस अङ्ग को कटा हुआ दिखाना है उसके ठीक नाप का एक खांचा छुरी के बीच के भाग में धार की ओर कर दिया जाता है। इस खाचे को उस अङ्ग में फिट कर देते हैं। बिना कमानी के चश्मे जिस प्रकार नाक में फिट हो जाते हैं और नीचे नहीं गिरते उसी प्रकार यह छुरी भी उस अङ्ग के साथ सट कर अटक जाती है और गिरती नहीं।

[३५] एक चाकू लेकर उससे नीबू काटते हैं। नीबू में से रस की बजाय खून निकलता है।

चाकू को कटहल के दूध में तर करके सुखा लेते हैं। कटहल के दूध और नीबू की खटाई का संमिश्रण होने पर इस का रङ्ग लाल हो जाता है। लोग उसे खून समझते है।
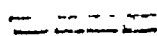
सामान के सहारे होने वाले खेल।

(२८) रुई ओटने की दो बेलन वाली चर्खी के समान एक लकड़ी की चर्खी लेकर उसमें एक तरफ से सादा कागज लगाते हैं दूसरी ओर से असली नोट छपा हुआ तैयार होकर निकलता है। कई सादे कागज लगा कर कई नोट तैयार करके दिखाये जा सकते हैं।

इस चर्खी के दोनों बेलनों के बीच एक लम्बी कपड़े की पट्टी का एक सिरा एक चर्खी के बेलन में बारीक चोबों के सहारे जड़ दिया जाता है और दूसरा सिरा दूसरे बेलन में जड़ा होता है। पट्टी बेलनों से लपेटी रहती है। इस लपेट के पर्तों में पहले से ही नोट लपेट दिये जाते हैं एक तरफ से जब सादे कागज लगाये जाते हैं तो वे पट्टी के पर्तों में भीतर चलते जाते हैं। दूसरी ओर से वे नोट बाहर निकलने लगते हैं जो पहले से ही पर्तों के अन्दर भरे हुए थे। दर्शक समझते हैं कि चर्खी जादू की बनी है जो तुरन्त ही कागज को नोट बना देती है। इस खेल के लिए नये नोट लिए जाते हैं।

(२९) एक आर पार छेद की लकड़ी का गोला लेकर उसमें डोरी पिरो दी जाती है। डोरी का एक सिरा जमीन की ओर दूसरा आसमान की ओर करके दोनों हाथों से पकड़ लेते हैं। जादूगर जब आज्ञा देता है तब गोला चलने

है जब रुकने को कहता है तो रुक जाता है। तेज और धीमी चाल भी वह गोला जादूगर के कहने पर चलता है।

यह गोला विशेष रीति से बनाया जाता है। लकड़ी का एक सादा गोला बनवा कर उसे बीच में से चीरते हैं और भीतर की लकड़ी खोद-खोद कर उसे पोला कर लेते हैं। इसके आधे भाग में एक चोवा लगा देते हैं। डोरी आर पार डालने के लिए जहां छेद रखा गया है वहीं से एक डोरी निकाल कर उसे चोये के नीचे डाली जाती है और दूसरी ओर के छेद में होकर उसे निकाल देते हैं। अब उस गोले के दोनों भाग सरेस से चिपका दिये जाते हैं और ऊपर रङ्ग कर दिया जाता है जिससे कि उसका चिपका हुआ होना मालूम न पड़े।

डोरी छेद में सीधी आर पार गई हुई दिखाई पड़ती है पर वास्तव में वह चोवे की बगल में होकर तिरछी आती है। इसलिए जब डोरी को जरासा कड़ा कर दिया जाय तो गोला रुक जाता है। जब थोड़ी-सी ढील दी जाय तो नीचे चलने लगता है। जब अधिक ढील दी जाती है तो अधिक तेजी से चलता है और जब थोड़ी ढील रहती है तो धीरे २ नीचे उतरता है।

(२८) एक दियासलाई का बक्स खोलकर जादूगर सबको दिखाता है, वह बिलकुल खाली होता है पर जहां फूंक मार कर दुबारा दिखाता है तो बक्स दियासलाईयों से भरा होता है। इसे कितनी ही बार खाली और भरा दिखाया जाता है।

दियासलाई की डिब्बी के ऊपर जो तस्वीर हो, उसी प्रकार की एक और डिब्बी लेकर उसकी तस्वीर पानी में

भिगो कर उतार लेते हैं। और उसे पहली डिब्बी की पीठ पर चिपका देते हैं। दोनों ओर से वह तस्वीरदार बन जाती है। अब भीतर की दो दराज निकाल कर उसकी पीठ पर सरेस के सहारे बराबर २ एक लाइन में दियासलाइयां चिपका देते हैं।

खेल दिखाते समय पहले खाली दराज दिखाते हैं। फिर फूंक मारने के बहाने उसे उलट देते हैं। दूसरी ओर दराज की पीठ पर चिपकी हुई दियासलाइयाँ दिखाई जाती हैं। इधर से डिब्बी भरी हुई मालूम होती है। दोनों तस्वीरें चिपकी रहने के कारण उलटने का भेद प्रकट नहीं हो पाता।

(३६) एक पोली नली में चौड़ाई की ओर आर पार छेद करके एक लम्बा डोरा डाल देते हैं। डोरे को एक ओर खींचने पर वह लाल रङ्ग का होता है दूसरी ओर खींचने पर वह हरा हो जाता है।

पोली लकड़ी के एक सिरे पर ठीक सीध में दो छेद किये जाते हैं, दूसरे सिरे में एक पतली लोहे का पिन या चोबा ठोक देते हैं। एक सिरे के छेद से पिन तक जितनी लम्बाई है उससे दूना डोर लिया जा सकता है, इसे आधा एक रङ्ग का और आधा दूसरे रङ्ग का रङ्ग देते हैं। अब डोरे को एक ओर के छेद में पिरो कर नीचे पिन की तरफ ले जाते हैं और फिर पिन को दूसरी ओर से मोड़ कर वापिस लाते हैं और दूसरी तरफ के छेद में होकर पार निकाल देते हैं। देखने वाले समझते हैं कि डोरे को एक अंगुल की नली ही पार करनी पड़ रही है पर वास्तव में वह नली की लम्बाई का दूना चक्कर पार करके तब दूसरे छेद में पहुंचता है। इस तरह लाने में ही डोरे का एक रङ्ग छिप जाता है और पहले के [illegible] दूसरा रंग निकल आता है।

(४०) एक कांच की बोतल के पेंदे में छेद करके इसमें पानी भर कर कार्क बन्द कर दीजिए, पानी कहीं एक बूंद भी न फैलेगा। आज्ञा देते ही पेंदे के छेद में से पानी की धार निकलने लगेगी, फिर आज्ञा देने पर धार बन्द हो जायगी। आज्ञानुसार बार बार पानी चलता और बन्द हो जाता है।

इस बोतल में दो छेद कराये जाते हैं, एक पेंदे में दूसरा गरदन पर। बोतल में पानी भर देने के बाद कार्क बन्द कर दिया जाता है। हाथ में बोतल को पकड़ कर गरदन वाले छेद को जब तक उंगली से बन्द किये रहते हैं तब तक पेंदे के छेद में पानी नहीं निकलता। उंगली हटाते ही धार गिरने लगती है।

(४१) एक कापी के पन्ने खरखराते हुए लोगों को दिखाने पर वे बतलाते हैं कि कापी के सब पन्ने लिखे हुए हैं। फर फर कर दुबारा दिखाते हैं तो कापी के सब पन्ने कोरे बिना लिखे दिखाई देते हैं।

यह कापी मोटे कागजों की बनाई जाती है और इसके पृष्ठ (१-३-५-७) क्रम के सब पन्ने एक एक सूत काट कर छोटे कर दिये जाते हैं। अब इसके दाहिने हाथ की ओर से १-२ कोरे ४-५ लिखे ६-७ कोरे ८-९ लिखे इस क्रम से पृष्ठ तैयार करते हैं। कापी तैयार हो जाने पर उसे बाईं ओर से खरखराते हुए दिखाया जायगा तो सारी कापी कोरी दिखाई पड़ेगी, दाईं ओर से दिखाया जायगा सब पन्ने लिखे हुए नजर आवेंगे।

(४२) दो स्लेटें लेकर दोनों ओर खाली दिखा दी जाती हैं। उन्हें पानी से भीगे हुए कपड़े से पोंछ भी देते हैं,

जिससे उन पर कुछ लिखे होने का किसी को सन्देह न हो। इन स्लेट को दूर एक दूसरे के ऊपर रख दिया जाता है। खड़िया मिट्टी हाथ में लेकर जादूगर हवा में कुछ लिखता है। अब स्लेट को उठाने पर खड़िया से कुछ शब्द लिखे हुए मिलते हैं। कभी कभी कोई दर्शक कुछ शब्द बोलते हैं वह शब्द भी स्लेट पर लिखे हुए निकलते हैं।

यह दोनों एक से साइज की स्लेट टीन की बनी हुई ली जाती है। एक और तीसरी स्लेट उसी तरह की लेकर उसका चौखटा निकाल कर फेंक देते हैं और बीच की टीन को इस प्रकार कांट छांट कर ठीक कर लेते हैं कि उन दोनों स्लेटों के चौखटे को छोड़ कर बीच के भाग में दिखाई देने वाली टीन के ठीक बराबर हो।

एक स्लेट के ऊपर खेल दिखाने से पूर्व ही खड़िया से कुछ लिख लेते हैं और इसके ऊपर उस तीसरी स्लेट को काट छांट कर ठीक की हुई टीन को रख देते हैं। सिलेट को खाली दिखाते समय उंगली के सहारे उस पर्त को पकड़े रहते हैं जिससे वह गिरने न पावे। फिर दूर रखते समय दूसरी सिलेट को नीचे तथा लिखी हुई को ऊपर कर देते हैं जिससे वह ढक्कन नीचे वाली सिलेट के बीच में चला जाता है और पहले लिखे हुए अक्षर दर्शकों को दिखा दिये जाते हैं। यदि दर्शक के बोले हुए शब्द लिखने हों तो एक दर्शक पहले से ही अपना सिखाया हुआ बिठाया जाता है वही पहले उठ खड़ा होता है और वही शब्द लिखने को कहता है जो सिलेट पर पहले से ही लिखा हुआ तैयार होता है।

यदि यह खेल मेज पर दिखाया जाय तो दूसरी स्लेट की ज़रूरत नहीं पड़ती। स्लेट को खाली दिखा उसे औंधी

करके मेज पर रख देते हैं जिससे आने समय वह टीन का टुकड़ा मेज पर पड़ा रह जाता है। और स्लेट पर अक्षर दीखने लगते हैं।

(४२) एक छोटी लकड़ी की रौल (जादू का डंडा) लेकर जादूगर उसे मेज पर ठोक पीट कर उसके ठीक एवं असली होने का विश्वास दिलाता है इस डडे को एक कागज के लिफाफे में सबके सामने रखता है और लिफाफे का मुँह बन्द करके किसी आदमी के एक हाथ पर उसे रखता और दूसरे हाथ पर एक उतना ही बड़ा दूसरा कागज का खाली लिफाफा रखता है और कहता है कि मन्त्र के बल से इस लिफाफे में रखे हुए डडे को उस लिफाफे में भेज दूंगा। कुछ देर जन्त्र मन्त्र की मुद्रा बनाता है, बार २ टटोल कर देखता है पर जब डडा दूसरे लिफाफे में नहीं जाता तो नाराज होकर दोनों लिफाफों को फाड़कर फेंक देता है। दोनों में से किसी में भी डंडा नहीं निकलता तो दर्शक समझते हैं कि जादू का डंडा कहीं उड़ गया।

इस खेल में डडे के ऊपर काले कागज का एक खोल बना कर चढ़ा दिया जाता है। लिफाफे में बन्द करते समय डंडे को तो खींच लेते हैं और उसे पर चढ़े हुए खोल को लिफाफे में रख दिया जाता है। उस खोल को ही दर्शक डंडा समझ लेते हैं। लिफाफा फाड़ते समय अन्त में वह लिफाफा भी फाड़ फेंका जाता है।

(४३) दर्शकों की घड़ी मांग कर जादूगर एक खरल में रखता है और उसे कूट डालता है। इसके चूर-चूर किये हुए पुर्जे सबको दिखाने के बाद उस खरल को ढक कर रख देता है। फू क मारने के बाद ढक्कन को उठाता है तो वह

घड़ी ज्यों की त्यों साबित निकलती है। जिसकी घड़ी थी वह सब प्रकार अपनी घड़ी की परीक्षा कर लेता है तब उसकी घड़ी टूटने की नाराजी शान्त होती है।

घडी कूटने का खरल दो पर्त का बनाया जाता है। इस खरल के ऊपर ढकनेका एक चमड़े का ढक्कन इतना बड़ा होता है कि सारे खरल को भली भांति ढक लेता है। इस ढक्कन में एक कांटा मेख लगा होता है जिसमें उलझ कर खरल का एक पर्त ऊपर उठा चला आता है। दुबारा ढक कर उस पर्त को फिर उस खरल में छोड़ा जा सकता है।

दर्शक की घडी लेकर खरल में रखते हैं और उसे ढक्कन से ढक देते हैं। थोडी देर में ढक्कन उठाकर अलग रख देते हैं उसके साथ खरल का वह पर्त उठा चला आता है जिसमें दर्शक की असली खडी रखी होती है। नीचे के पर्त में एक टूटी हुई घडी के पुर्जे पहले से ही डाल रखे जाते हैं उनमें हलकी सी चोट लगा कर घडी का चूरा दिखा दिया जाता है। इसे फिर ढक देते हैं। अब ढक्कन उठाते समय खरल का ऊपर वाला पर्त फिर उसी में वापिस छोड़ देते हैं। घडी ज्यों की त्यों आजाती है, वह जिसकी थी उसको वापिस दे दी जाती है।

(४४) एक डिब्बा लेकर उसको दर्शकों को दिखाता है। कोई दर्शक उसमें फूल भरे बताता है किसी को बताशे भरे दिखाई देते हैं।

इस डिब्बे के दोनों ओर मुंह होते हैं, दोनों ओर ढक्कन लगे रहते हैं। पेंदा आधी गहराई में बीचों बीच होता है। एक ओर फूल भर दिये जाते हैं, दूसरी ओर बताशे। डिब्बे को आडा पकड कर दिखाने ले जाते हैं। किसी दर्शक

को इधर का मुंह ऊपर करके दिखा देते है किसी को उधर का। फल स्वरूप दो तरह की चीजें दिखाई पड़ती है। उस डिब्बे में कोई भी दो प्रकार की चीजें दिखाई जा सकती हैं।

(८५) कई बार जादूगर लोग मुंह में से गोली; गोले, कागज की लम्बी २ धज्जियां तथा अन्य प्रकार की चीजें ढेरों निकाल कर दर्शकों को आश्चर्य चकित कर देते हैं।

इस प्रकार के खेलों में यह होता है कि जो चीज मुंह में से निकालनी होती है उसे थोड़ी तादाद में पहले से ही मुंह में छिपाये रखे हैं। उस वस्तु को मुंह में से निकालने के बहाने हाथ ले जाते जाते हैं और हथेली में उस वस्तु को छिपाये ले जाते है। मुंह में दिखाई देने वाली वस्तु को निकालते समय हाथ में दबी हुई चीज को मुंह में रख देते हैं। एक चीज मुंह में से निकाल कर दर्शकों को दिखाते हुए मेज पर रखी मेज पर हाथ रखने और फिर मुंह में से चीज निकालने के लिए ऊपर हाथ रखते समय मेज पर से उस चीज को फिर लेजाते हैं और मुंह में रख देते हैं इसी प्रकार बराबर यह क्रम चलता रहता है और ढेरों की ढेरों चीजें निकाल कर जमा कर दी जाती हैं कागज की धज्जियां निकाने के लिए पहले से ही उन्हें लपेट २ कर रीलें सी बना लेते हैं। एक रील को मुंह में रख कर उसे खींचते जाते हैं और ढेरे लगाते हैं जब वह खतम होजाती है तो दूसरी रील फिर वहां पहुंचा कर खेल दिखाते रहते हैं।

(८६) किसी चीज को गुम कर देने के बाद अक्सर जादूगर लोग उसे किसी की जेब में से निकालते है। इस का भेद यह है कि जादूगर उस चीज को अपने हाथ में छिपा

ले जाता है और जेब में हाथ डाल कर जब वापिस निका-लता है तो उस चीज को जो हाथ में छिपी थी सबके सामने प्रकट कर देता है।

कुछ बड़े खेल ।

मेलो तमाशों में टिकट लगा कर कुछ खेल ऐसे दिखायें जाते हैं। जिन एक दो को देखने से ही दर्शकों का काफी मनोरञ्जन हो जाता है और वे भारी संख्या में उसे देखने पहुंचते हैं। इन खेलों को दिखाने वाले काफी पैसा कमा ले जाते हैं। नीचे ऐसे ही कुछ खेलों का वर्णन किया जाता है।

बंद लिफाफे की बात बताना ।

(४७) दर्शकों को बहुत से कागज दे देते हैं जिन पर वे अपनी इच्छानुसार थोड़ा २ लिखें और एक छोटे लिफाफे में बन्द कर दें। इन सब लिफाफों में इकट्ठे करलेना चाहिए। इस खेल में खास बात यह है कि एक आदमी जनता में अपना होना चाहिए जो अपनी लिखी हुई बात को पहले से ही बता दे। उसके लिफाफे पर कुछ खास निशान लगा हुआ हो जिससे वह पहचाना जा सके। अब खेल शुरू करना चाहिए। पहले कोई एक लिफाका उठावें, उसे कान के पास ले जावें और पहले बताये हुए आदमी की बात बता दें। और लोगों से कहें आप में दिखाता हूं कि यह बात लिखी है या नहीं और उसे खोल लो देखने वाल

समझेंगे कि यह वही लिफाफा है जिसकी बात अभी बताई है। परन्तु वास्तव में यह वह लिफाफा है जिसे जादुगर आगे बताने को है। इस लिफाफे को ध्यान पुर्वक पढ़ लेना चाहिए और लोगों से उस आदमी द्वारा कहलवा देना चाहिए कि "हां ठीक वही खत है जो अभी इनने बताया।" और इस लिफाफे को दूसरी तरफ डाल दें। अब दूसरा लिफाफा उठावे और कान के पास ले जाकर पहले पढ़े हुए लिफाफे का मजमून सुना दें और लोगों से पूछा कर जाच के लिए फिर इसे पढ़वाने के बहाने खुद पढ़लें इसी प्रकार पहले पढ़े हुए लिफाफे को आगे वाले के साथ बता दें। दर्शक लोग यही समझते रहेंगे कि पहले यह बता देता है तब यह खोलता है। उन्हें यह नहीं मालूम हो पाता कि जादूगर के हाथ मे तो दूसरा लिफाफा है जिसके बारे में यह बतला रहा है उसे तो वह पढ़ कर दूसरी तरफ डाल चुका अगर अपने आदमी को जो पब्लिक मे मिला हुआ है किसी बाहर के आदमी को स्टेज पर खड़ा करलो और उसका झूंठ मूंठ विश्वास दिखाने के बहाने लिफाफा खोलने का कार्य कराओ तो खेल में सोने की सुगंध का मजा आता है लोग दांतों तले उंगली दबाते हैं।

प्याले में दो आदमियों सिर।

(४८) एक ऐसी सादा मेज लेना चाहिए जिसके पायों की ओर लकड़ी की पट्टी हो। इस पट्टी से ऊपर के तख्ते तक की ऊँचाई के नाप का एक दर्पण मेज के ठीक आधे हिस्से में फिट कर देना चाहिए। खेल दिखाने के स्टेज पर

जिस रङ्ग का फर्स हो ठीक उसी रङ्ग का कपड़ा मेज से कुछ आगे इस प्रकार तानना चाहिए जिससे वह स्टेज की वाउन्ड्री ही मालूम पड़े। अब आप समझ गये होंगे कि ऐसा करने से क्या लाभ होगा ? इससे दर्पण के ऊपर मेज के आगे वाले दो पाये और सामने वाले कपड़े की ही छाया पड़ सकती है देखने वालों की छाया कपड़े की वजह से न पड़ेगी अब आप देखेंगे तो शीशे का पता भी न चलेगा क्योंकि आगे वाले मेज के दो पायों की छाया से पीछे वाले पायों का भ्रम होता है और आगे वाले कपड़ों से फर्स का ज्ञान होता है बिना अधिक खोज बीन किये यह मालूम होता है कि मेज पूरे फर्स के ऊपर चारों पायों समेत खुली जगह में खड़ी है। इस मेज का ऊपर वाला तख्ता कटा हुआ होना चाहिए जिससे शीशे के पीछे बैठे हुए आदमी की गरदन उसमें होकर ऊपर आ सके एक स्त्री और दूसरा पुरुष की शकल के लड़के, शीशे के पीछे बिठाये जायँ और कटे स्थान के चारों ओर एक बिना पेंदे का चौड़ा प्याला रख दिया जाय। अब हुक्म कीजिए कि इस प्याले में एक आदमी का कटा हुआ शिर आवे। लड़का तुरन्त ही अपना शिर नीचे से निकाल देगा इसी प्रकार स्त्री का शिर आयेगा। लोगों के प्रश्नों के उत्तर देगा और आज्ञा पाते ही गायब हो जावेगा। यह खेल भी बड़े मजे का है।

हुआ प्याला, छड़ी, पुस्तक, बाजा, दियासलाई आदि इस तरह की सैकड़ों चीजें वह मॉगता है । उसकी मागी हुई चीजें बीच ही बीच पोले आकाश में अचानक प्रकट होती हैं। और जब तक चाहता है हवा मे झूलती हैं। उन चीजों से प्रयोजन पूरा करने के बाद उन्हें फिर फेंक देता है वे हवा में झूलती है और जब आज्ञा देता है गायब होजाती हैं।

चूंकि यह चीजें ऊपर नीचे नहीं आती जाती, बीच ही बीच प्रकट और गायब हो जाती है, इससे यह शुबा नहीं होता कि कट पुतली की तरह कोई तार लगा कर वस्तुऐ ऊपर से नीचे लाई ले आती हैं दूसरे जादूगर खुद भी हवा में अधर लटक जाता है और कभी बीचों स्टेज पर बिना किसी आड के सबके सामने गायब हो जाता है। देखने वालों को उस समय जादूगर बिलकुल एक प्रकार का अलौकिक भूत प्रेत जैसा करतब दिखाई पड़ता है दर्शक आश्चर्य में दङ्ग रह जाते है।

इस खेल मे देखने वालो की आंखों को धोखा दिया जाता है। स्टेज काली मखमल को बनाया जाता है खेल रात में दिखाते हैं। दोनों ओर गैस की रोशनी लगा देते हैं। एक लड़का काली मखमल का खोल सिर से पैर तक ओढ कर स्टेज में फिरता रहता है काली मखमल की तेज कालिमा इतनी गहरी होती है कि काले खोल से ढका हुआ लड़का उसमें चलता फिरता नजर नहीं आता। वह लड़का पर्दे के पीछे रखी हुई चीजों को लाकर देता रहता है, अधर पकड़े रहता है और वस्तुओं को अपनी बगल में छिपा ले जाता है इस प्रकार यह खेल बड़ा ही अद्‌भुत दृष्टिगोचर होता है।

बक्सों के खेल

(५२) बक्सों की सहायता से बड़े बड़े खेल किये जाते हैं। एक बक्स खाली दिखा कर उसमें कोई बहुत बड़ी चीज निकालते तथा उस बक्स में बहुत बड़ी इतनी बड़ी जिससे बक्स करीब-करीब भर सा जाता है ढक्कन लगा कर रख देते हैं और फिर जब उसे खोलते हैं तो वह रखी हुई चीज गायब हो जाती है। दर्शकों को इसमें विशेष रूप से आश्चर्य इस लिए होता है कि इसमें संदेह करने की गुंजायश बहुत ही कम होती है।

बक्स बीच स्टेज पर रखा होता है जिससे यह आशंका नहीं होती कि पीछे पर्दे की आड़ में बक्स की वस्तु किसी प्रकार छिपाई गई होगी। बक्स जिस जगह रखा होता है उसके नीचे कोई तहखाना या पोल तो नहीं है जिसमें चीज छिपाई जाती हो इसका भी खूब ठोक पीट कर विश्वास करा दिया जाता है। अक्सर उस बक्स को किसी बड़ी मेज पर भी रख देते हैं जिससे बक्स की वस्तु के छिपाये जाने का संदेह दर्शकों के मन में उत्पन्न न होने पावे।

इस प्रकार रख कर उस लकड़ी के बक्स को सब ओर से ठोक बजा कर दिखाते हैं कि कहीं से टूटा फूटा तो नहीं है। साथ ही उसके भीतर की गहराई और बाहर की ऊंचाई नाप कर दिखाते हैं कि जिससे यह आशंका न रहे कि इसमें भीतर कोई पर्त होगा। जिससे चीज छिप जाती होगी। साधारणतः सब परीक्षाओं के बाद यह सिद्ध हो जाता है कि यह सीधा साधा लकड़ी का बक्स मात्र है और इसके आगे पीछे कोई लाट लपेट नहीं है। यह सब होने

हुए भी इस बक्स में से बहुत बड़ी आकार की वस्तुएँ गायब होना और उनका तथा उनके स्थान पर दूसरी चीजों का आजाना एक आश्चर्य का विषय है।

इस बक्स को खाली दिखाया जाता है फिर उसमें एक मनुष्य प्रकट होता है। इसके बाद वह आदमी उसी बक्स से गायब हो जाता है फूल, मेवा, मिठाई, रुमाल, कबूतर, खरगोश, जैसी अनेकों चीजें निकलती और गायब होती है। जादूगर अपने मनोरंजन और मधुर वार्तालाप द्वारा खेल को और भी आकर्षक बना देता है सब दर्शकों का मन मोह लेता है। इस एक ही बक्स के सहारे सैकड़ों किस्म के खेल दिखाए जा सकते हैं। अलादीन का चिराग की तरह यह जादू का बॅक्स मनमानी चीजे प्रकट और गायब करता है देखने वालों का बड़ा मनोरंजन होता है।

इस बक्स का बनाने में एक रहस्य होता है। जिस तरफ सांकल कुंदा होता है उस तरफ की दीवार के सहारे भीतर की ओर एक टीन की दीवार लगाई जाती है। इसे इसी रंग से रंग देते है जिस रंग से बक्स रंगा होता है। यह टीन की दीवार नीचे के पेंदे के साथ जुडी होती है। नीचे का पेंदा खुलने और बन्द होने वाला होता है। उसमें एक छोटी कील इस तरह लगाई जाती है जिसके जरा हटाने से पेंदा खुलता और बन्द होता है। बक्स चौकोर होना है। उसे जब दर्शकों को दिखाना होतो है तो ऊपर वाला ढक्कन जिधर होता है उसे दर्शकों की तरफ लौटा देते हैं। साथ ही पेंदे की चटखनी वाली कील हटाकर पेंदे को पीछे पलट देते है। पेंदे के साथ-साथ वह वस्तु जो बक्स मे रखी हुई थी बक्स की आड में पीछे की ओर चली जाती

है। फलस्वरूप दर्शकों को दिखाई नहीं पड़ती। लकड़ी की असली पेंदा पीछे चला जाता है पर उसके स्थान पर नकली टीन का पेंदा आ जाता है। रंग उसका भी लकड़ी जैसा ही होता है इस लिए किसी को यह मालूम नहीं हो पाता कि बक्स में कुछ हेर फेर हो गया है। जब इस बक्स को फिर सीधा करते हैं तो असली पेंदा अपनी जगह पर और नकली अपनी जगह पर आ जाता है, जिससे जो वस्तु गायब हुई थी पर फिर प्रगट हो कर आ जाती है।

जादूगर बक्स के पीछे रहता है। वह उसे ढकने के बहाने या वैसे ही उस पर हाथ फिराने के बहाने पेंदा हटने के कारण पीछे गई हुई चीज को हटा कर उसके स्थान पर दूसरी चीज रख देता है जिससे वस्तु गायब होकर दूसरी प्रकट होने का खेल होता है। इस तमाशे मे दर्शकों को सामने बिठाया जाता है। पीछे क्या हो रहा है इसे लोग देखने न पावें इसकी खास व्यवस्था रखी जाती है।

बोतल में सिगरेट नचाना।

(५३) कांच की सफेद बोतल के नीचे के हिस्से को एक इंच किसी रंग से रंगवा लीजिए जिससे उसकी पेंदी में पड़ी हुई चीज दिखाई न दे। एक सिगरेट के बीच में आलपिन लगाकर उसमें एक रेशमी डोरा या बाल बांध कर बोतल से बाहर रखिए और सिगरेट को बोतल में डालिए, अब एक सिगरेट जला दीजिए और कहिए कि इस जली सिगरेट को आपके सामने नाचता हुआ पैदा करता हूं यह कहकर बोतल से बाहर पड़े हुए रेशमी डोरे को अपनी उंगली

में सफ़ाई से उलझा दीजिए । अब जैसे २ आपका हाथ चलेगा वैसे ही वह सिगरेट नाचेगी लोगों को बड़ी खुशी होगी ।

घड़ी तोड़ना

(५४) टीन या लकड़ी का एक खरल इस प्रकार का बनवाइए जिसके दो पर्त हों और किनारे पर आकर दोनों ऐसी टक्कर खाते हों कि दोनो एक ही मालूम पड़ें । ऊपर वाला हिस्सा कुछ निकला हुआ रहे । नीचे वाले खरल की पेंदी में एक घड़ी छिपाये रखने लायक गड्ढा होना चाहिए । इस खरल को ढकने के लिए चमड़े का एक खोल खरल की ही शकल में नीचे को मुड़ा हुआ होना चाहिए अर्थात् उसे खरल पर रखदे तो वह पूरा ढक जाय । तमाशा दिखाते समय ऊपर वाले पर्त को चमड़े के खोल में छिपा कर रख दीजिए और किसी की साबित घड़ी मंगा कर, उसमें रख कर चमड़े के खोल से खरल को ढंक दीजिए इस ढकन में ऊपर के पर्त को लाकर खरल में फिट कर दीजिए । ऊपर के पर्त मे एक दूसरी घड़ी के पुर्जे पहले से ही रखने चाहिए । इन्हें लकड़ी के दस्ते से ही धीरे धीरे कुचल दीजिए जब आप टूटे हुए पुर्जे लोगों के सामने पेश करेंगे तो घड़ी वाला बहुत नाराज होगा और कहेगा मेरी घड़ी लाओ, अब आप खरल के साथ ऊपर वाले पर्त को फिर उठाकर ले जाइए और अलग रख दीजिए नीचे के भाग मे साबित घड़ी रखी है उसे आप ज्यों की त्यों दे दे तो लोग आपको सिद्ध समझेंगे ।

नकली मैस्मरेज़म।

आपने देखा होगा कि बाजीगर लोग एक लड़के को पास देकर बेहोश करते हैं, उसे कपड़े से ढक देते हैं, ऊपर से उसकी छाती पर एक तावीज रख देते हैं। लड़के की आंखों से पट्टी बांध दी जाती है। बाजीगर कोई सवाल पूछता है लड़का उसका उत्तर देता है। इस खेल को देखकर लोग बड़े अचम्भे में रह जाते हैं। इसे तावीज की करामात समझते हैं। बाजीगर के तावीज धड़ाधड़ बिकने लगते हैं। पैसों का ढेर लग जाता है।

रहस्य यह है कि बाजीगर अपने ही लड़के को बेहोश करके प्रश्न पूछता है। वह लड़का पहले ही से सिखाया पढ़ाया होता है। अगर आप अपना लड़का पेश करें कि इसे बेहोश करके प्रश्न पूछो तो उनकी सारी कलई खुल सकती है। तमाशा करने वाला कुछ प्रश्न और उत्तर पहले से ही तय्यार करता है और उसे लड़के को भली भांति कण्ठस्थ करा देता है। तमाशा करते वक्त उपस्थित लोगों की चीजों को बाजीगर छूता है और उसका नाम कपड़े से ढके हुए लड़के से पूछता है। इसे पूछने में प्रश्न की भाषा पूर्व निश्चित होती है। लड़का ध्यान से इसे सुनता है और कंठस्थ उत्तर कह देता है।

एक छोटी सी प्रश्नोत्तरी नीचे दी जाती है। ऐसी ही और भी बनाई जा सकती है। तमाशे में कैसे लोग उपस्थित होंगे और उनके पास क्या २ चीजें होंगी, इस बात का ध्यान रखते हुए बाजीगर समय २ पर नये नये प्रश्नोत्तर बनाया करते हैं।

जादू के अद्भुत से खेलों को दिखाते हुए बाजीगर लोग अपने आप को मैस्मरेज़्म बताया करते हैं, हम स्वयं कई वर्ष इसी चक्कर में फंसे रहे हैं. भारत के इस कोने से उस कोने तक बड़े बड़े चमत्कारियों की लंगोटियां धोते फिरे हैं, सैकड़ों एक से एक चमत्कारी खेल सीखने के बाद अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि कोई धूर्त व्यक्ति इनको काम में लाकर पैसा बटोर सकता है, पर आत्मोन्नति कुछ नहीं कर सकता निरंतर छल करेब का अभ्यास करने से और उलटा नीचे को ही गिरेगा इसलिए झूठी जादूगरी के पीछे न पड़कर सच्ची आत्म साधना करनी चाहिए।

साधक सिद्ध का जोड़ा ।

(५५) साधक सिद्ध की जोड़ी बना कर खेल न हो
पर भी अनेक खेल दिखाये जा सकते है । दर्शकों बीच
एक या कई आदमी अपने सिखाये पढ़ाये हुए बिठा दि
जाते हैं । कोई सज्जन मेरे पास आये जादूगर की यह ब
सुनकर साधारण दर्शक तो झिझक के कारण पहले उ
नहीं पर वह सिखाये पढ़ाये आदमी तुरन्त उठ कर उस
पास पहुंच जाते हैं ।

सिखाये हुए आदमी की सहायता से अनेकों खेल
सकते हैं । जैसे उस आदमी को एक रुपया दिया कि
मुट्ठी में पकड़ लो । पर वास्तव में उसे दिया नहीं । उससे पू
तुम्हारी मुट्ठी में रुपया है वह कहता है-है । फिर मुट
खुलवाई तो वह न निकला । दर्शकों ने समझा बन्द मुट
में से रुपया उड़ गया । किसी वस्तु को कुछ का कु
बताना । जैसे पुस्तक दिखाई तो वह बता रहा है कि
स्लेट है दर्शक समझ रहे हैं कि जादू के कारण इस आ
को कुछ का कुछ दीख रहा है ।

कई व्यक्ति जब इस प्रकार से सीखे होते हैं तो वे ज
गर की मनमर्जी का झूठ बोल कर लोगों को हैरत में डा
हैं । दर्शक समझते हैं कि यह लोग ठीक ही कहते होंगे
विश्वास के कारण ही वे उल्लू बनते हैं । घड़ियों का
एक बार आगे पीछे होजाना भी इसी प्रकार मिली भगत
होता है ।

इस ओर आकर्षित न हूजिए।

पिछले पृष्ठों पर जादू के कुछ थोड़े से खेल लिखे हुए हैं, इसके अतिरिक्त भी हमने सैकड़ों प्रकार के खेल एक समय बड़ी रुचि पूर्वक सीखे थे, और उन्हें मित्रों को दिखाते हुए अपनी एक बड़ी जीत अनुभव करते थे, पर अब हम देख रहे हैं कि यह सब निरर्थक है। इससे न दिखाने वाले का भला होता है न देखने वाले का, वरन् यह सब उलटा हानि कारक है। इसलिए अपने पाठकों से हमारा निवेदन है कि वे जादूगरी के कौतूहलों में न तो कोई सिद्धि या योग विद्या का आरोप करें और न उनकी ओर आकर्षित होकर बाल-बुद्धि का परिचय दें। छल चाहे वह मनोरंजन के ही रूप में क्यों न किया जाय, हानिकारक, आत्मपतन करने वाला सिद्ध होता है इसलिए इस मार्ग में आकर्षित होने का किसी को प्रयत्न न करना चाहिए।

मनुष्य को देवता बनाने वाली पुस्तकें:—

(१) मैं क्या हूँ ।=) (२) सूर्य चिकित्सा विज्ञान ।=)
(३) प्राण चिकित्सा विज्ञान ।=) (४) परकाया प्रवेश ।=)
(५) स्वस्थ और सुन्दर बनने की विद्या ।=)
(६) मानवीय विद्युत के चमत्कार ।=)
(७) स्वर योग से दिव्य ज्ञान ।=) (८) भोग में योग ।=)
(९) बुद्धि बढ़ाने के उपाय ।=), (१०) धनवान् बनने के गुप्त रहस्य ।=)
(११) पुत्र या पुत्री उत्पन्न करने की विधि ।=)
(१२) वशीकरण की सच्ची सिद्धि ।=)
(१३) मरने के बाद हमारा क्या होता है ? ।=)
(१४) जीव जन्तुओं की बोली समझना ।=)
(१५) ईश्वर कौन है ? कहां है ? कैसा है ? ।=)
(१६) क्या धर्म, क्या अधर्म ।=) (१७) गहना कर्मणोगति ।=)
(१८) जीवन की गूढ़ गुत्थियों पर तात्विक प्रकाश ।=)
(१९) पंचाध्यायी धर्म शिक्षा ।=) (२०) शक्ति संचय के पथ पर ।=)
(२१) आत्म गौरव की साधना ।=) (२२) प्रतिष्ठा का उच्च सोपान ।=)
(२३) मित्र भाव बढ़ाने की कला ।=)
(२४) आंतरिक उल्लास का विकास (२५) आगे बढ़ने की तैयारी ।=)
(२६) अध्यात्म धर्म का अवलम्बन ।=)
(२७) ब्रह्मविद्या का रहस्योद्घाटन ।=)
(२८) ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्ति योग ।=)
(२९) यम और नियम ।=) (३०) आसन और प्राणायाम ।=)
(३१) प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ।=)
(३२) तुलसी के अमृतोपम गुण ।=)
(३३) आकृति देखकर मनुष्य की पहचान ।=)
(३४) मैस्मरेजम की अनुभव पूर्ण शिक्षा ।=)